सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 184

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
अप्रैल – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

हम सभी को पता हे कि मानव जन्म प्राप्त होने तक हमारी उत्क्रांति यानी विकास निसर्ग पर निभ्रर होता है। मानव जन्म प्राप्त होने के बाद अपना विकास हमें खुद को ही करना पड़ता है।

आप लोग कहेंगे कि जब हम जन्म लके र आए तो सिर्फ 3.5 या 4.5 किलो के थे और आज हम 20, 80 या 90 किलो के हो गए है तो यह हमारी विकसित अवस्था हो गई। लेकिन यह विकास किसका है? तो हमारी देहिक अवस्था का। यह विकास तो हमारा जरूरत से ज्यादा हो गया है। लेकिन उसके साथ हमें आत्मिक अवस्था का विकास भी करना है। अगर हम अपनी आत्मिक अवस्था क्या है और उसका विकास किस मार्ग से प्राप्त करना है यह समझ नहीं पाए तो यह प्राप्त जन्म व्यर्थ गवां देंगे। यह अवस्था समझने के लिए और फिर उसमें से उत्क्रांत अवस्था प्राप्त करने के लिए हमें गुरु की आवश्यकता होती है।

हम आस पास देंखें तो सभी जानवर अपने आप पानी में तैरना जानते है। कोई जानवर के बच्चे को पानी में डाला तो वो तैरना नहीं जानता। उसे तैरना कोई किताब पढ़कर भी नहीं आ सकता। उसके लिए उसे सीखाने वाले गुरु की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार आप तत्व में तैरने के लिए हमें गुरु चाहिए। उसी प्रकार अगर आकाशतत्व में तैरना है तो हमें वं. दादाजी के जैसे समर्थ गुरु की आवश्यकता है।

आज ईश्वर कृपा से जो माध्यम हमें प्राप्त हुए है क्या उनका अनुभाव हम पूरी तरह ले सकते हैं? जैसे हमें विचार करने का माध्यम दिया है, लेकिन विचार यानी क्या? क्या यह हमें समझ आया है? जब हमारी देहिक अवस्था बढ़ती गई, हमें अनेक विषयों का परिचय होता गया। उसी प्रकार अनेक विषय हम अपने पहले जन्म में से लेकर आए। अब विषयों की जरुरत से ज्यादा बढ़त हो गई और वही विचार बनकर हमारे माध्यम से प्रकट होते रहते है। लेकिन असली मतलब में शुद्ध विचार करने के लिए हमारी बुद्धि का उपयोग करना हम भूल गए है। इसीलिए परमेश्वर उपासना से अपनी रोजमर्रा जिंदगी के कामों तक हमारी जिंदगी का मक्सद 'विषय' और 'वासना' हुआ है। इस गुरुमार्ग का लाभ लेने के बाद वं. दादा जी के कृपाशीर्वाद से हमारे विमोचन हुए यानी हमें क्या अनुभव आना चाहिए तो हमारी बुद्धि जो विषय वासना के पीछे भाग रही है, वह रुक जायेगी, या धीमी हो जायेगी। फिर वं. दादाजी हमारे गतजन्म के विषय और इस जन्म में धारण होने वाले विषय विमोचन द्वारा विभक्त करना गुरु करते है और हमारे माध्यम में 'मन' अवस्था साकार होने लगती हे। मन साकार होने लगा तो समाधान का अनुभव आने लगता है।

हम सभी को इस गरु मार्ग में आने के बाद ऐहिक कम–ज्यादा प्राप्त हुआ हो लेकिन समाधान सभी को प्राप्त करा दिया है। यानी सबका आत्मिक विकास जरुर हो रहा है।

आज श्री गुरुकृपा से हम जिस अवस्था में आ पहुँचे है वह कौन सी अवस्था है यह समझना और उसे पूरी तरह प्राप्त करने के लिए उसे क्या पोषक है यह जानना और उस

दिशा में प्रयत्न करना यही संकल्प इस नए साल में हम सभी गुरुबंधुभगिनियों को करना है।

आज हम कोई अगतिक कृत्यों के बारे में (खून, रेप, आदि) सुनते है और उनके विषय में चर्चा करके अपनी शक्ति व्यर्थ खर्च करते रहते है। क्या हम ये सोचते है कि कोई अन्य मानव जो हमारी तरह ही है वह ऐसा अगतिक कृत्य कैसे कर पाता है?

वं. दादाजी ने हमें बताया है कि जन्म तीन प्रकारों के होते है। इसमें कर्मपरत्वे जन्म में दो भाग होते है, ईच्छापरत्वे और वासनापरत्वे। वासनापरत्वे जन्म में कुछ ऐसे अगतिक अवस्था के जीव है जिनकी अवस्था इस प्रकार हो गई है कि उन्हें देव–धर्म पता नहीं है। अनाचार करना, हिंसाचार करना यह उनको पाप नहीं लगता। किसी का कत्ल किया तो पश्चाताप नहीं होता। साधारण मानवों को खून देखा तो चक्कर आता है, फिर कुछ लोग आसानी से कत्ल कैसे कर पाते है? क्योंकि वे जन्म लने के व्यसन में अटके हुए है। जैसे किसी को सिगरेट पीने का व्यसन होता हे। वह ज्यादा हो गया और सिगरेट नहीं मिली तो बीड़ी चलती है। वो भी नहीं है तो किसी और ने फेंकी हुई बीड़ी भी चलती है। लेकिन व्यसन के बिना वो बेचैन हो जाता है। उसी प्रकार यह अवस्था में कुछ आत्मे (जीव) ऐसे है कि उनको जन्म लेने का व्यसन लगा है। कर्म नहीं है तो भीख मांगनी पड़ेगी यह पता होने के बाद भी जन्म को आना है। जन्म को आकर कोई भी काम करने के लिए वे तैयार है। पहले के अनेक जन्मों के कारण जन्म को आना और जाना यह मार्ग उनको पता है। ऐसे अनेक जन्मों के विषयों के अधीन हुए ऐसे जीव जीवन प्राप्ति के व्यसन में अटक गए है। जब तक व्यसन मुक्तता नहीं होती तब तक स्वाभाविक उन्नति प्राप्त करना उसके लिए संभव नहीं होता। आज सामान्य मानव झूठ बोलते समय इतराता है लेकिन कुछ मानव उस अगतिक अवस्था तक पहुँच गए है। हमारी ऊँकार साधना, हमारे आत्मिक विकास से प्राप्त हुई आत्मिक शक्ति, गुरुशक्ति ऐसे जीवों को कर्म करने की बुद्धि दे सकती है। लेकिन अवस्था तक जाने के लिए हमें प्रयत्न करने चाहिए। श्री गुरु हमारी राह देख रहे है कि कब हम वह प्रयत्न शुरु करें।

आज हमें ऐहिक कम मिला तो अपने नसीब को कोसते है। लेकिन हमारे देह के

अंदर जो आत्मा है वह कम से कम ऐसे जन्म प्राप्ति के व्यसन में तो नहीं है, इस बात का हमें समाधान मानना चाहिए। फिर ऐसा श्रेष्ठ गुरुमार्ग मिला है तो हमारा नसीब कितना अच्छा होगा? इसका समाधान क्या हमें है? जीवन में प्रथमतः कहीं तो समाधान मानना जरुरी होता है। उसके बिना अगले समाधान का हम अनुभव नहीं ले सकते। पहले पत्थर के ऊपर दूसरा रखा जाता है और फिर वहां इमारत खड़ी होती है।

इस आने वाले नए साल की सभी को अनेक शुभ कामनाऐं। प.पू. बाबा और वंदादाजी की दुआ से यह साल सभी को सुख, शांति, समाधान एवं आत्मिक उन्नति प्रदान करें, यही उनके चरणों में प्रार्थना।

।। शुभं भवतु ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible